Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

मंदिरों का निर्माण व धार्मिक कर्मकांड (मस्जिद और मबतब के बारे में विहंगावलोकन दृश्य)

डॉ0 गरिमा
एम.ए., पीएच.डी. (इतिहास)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर (बिहार)

मिथिलावासी धर्म के प्रति बहुत ही प्रतिबद्ध थे और आज भी है। इस क्षेत्र में वर्णाश्रम में अधिक विश्वास है। त्रिदेव, ब्रह्म, विष्णु महेश की पूजा आदिकाल से इस क्षेत्र के निवासियों में प्रचलित रही है, पर अधिकांश मिथिलावासी शिव, शक्ति तथा विष्णु के आराधक है। शिव के प्रति आस्था रखने वाले शैव कहे जाते है। पर शैव और वैष्णव संप्रदाय का विभाजन जिस रूप में दक्षिण भारत में है वैसा मिथिला में कहीं भी नही दिखाई देता है। अधिकांश शिव के आराधक विष्णु की भी आराधना पूर्ण निष्ठा से करते है। चूंकि मिथिला पर बंगाल का गहरा प्रभाव पड़ा था। फलतः यहाँ के निवासी शक्ति या देवी या शिवा की आराधना भी पूर्ण निष्ठा से करते है। दुर्गा पूजा तथा काली पूजा में यह स्पष्ट दिख पड़ता है। आप मैथिलों के ललाट पर चंदन पर ध्यान देंगे तो पता चलेगा कि यह तीन प्रकार के होते है। माथे (ललाट) पर भस्म की तीन रेखाएँ शिव के आराधक, सफेद चंदन विष्णु भक्त का एवं मध्य में रक्त चंदन अथवा सिन्दूर का गोलवृत्त शक्ति के आराधकों द्वारा लगाया जाता है। यह बता देना उचित होगा कि शिव का स्थान मिथिलावासियों में बहुत ऊपर है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण महेशवाणी, नचारी आदि का व्यापक स्तर पर गाया जाना है।

मिथिला के भौगोलिक सीमा में अनेक अतिप्राचीन शिव मंदिरों का पाया जाना भी इसी का प्रमाण है। दरभंगा का कुशेश्वर स्थान, सोमेश्वर स्थान (अरेराज, चंपारण) गरीब स्थान (मुजफ्फरपुर) वर्द्धमनेश्वर स्थान

(देकुली, लहेरियासराय) शिव मंदिर भागलपुर, शिव देवल (शिवहर) आदि मिथिलावासियों के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। इन स्थानों पर श्रद्धा और विश्वास के साथ पूजन में इनका उत्साह देखते ही बनता है। यहाँ एक ओर प्रथा है। कांधे पर गंगाजल लेकर कांवर पर, शिव मंदिरों में जल अर्पण इनकी पूजन पद्धति में आता है। विशेषकर शिवरात्रि, वसंत पंचमी, और सोमवती अमावस्या में यह देखा जा सकता है। कांवर लेकर वैद्यनाथ धाम (देवघर, झारखंड) से गंगा जल अर्पण भी इसी कड़ी में आता है। पूरे सावन तथा दशहरा में जलार्पण का विश्व प्रसिद्ध मेला सुल्तानगंज से देवघर तक लगता है। अनुमानतः इसमें प्रत्येक दिन लाखों कांवरिया शिव का जलाभिषेक करते है। पर सावन के प्रत्येक सोमवार को इस क्रम में बहुत महत्व है।

शक्ति पूजन भी मिथिला में प्रचलित है। आदिकाल से शक्ति के कई पीठ और आराधकों की बहुत बड़ी आबादी मिथिला की विशेष पहचान रही है। पूर्व में बताया जा चुका है कि दुर्गा पूजा (दशहरा के समय और काली पूजा, दिवाली के समय इसके ज्वलंत प्रमाण है। बेनीपट्टी (मधुबनी) के समीप उच्चेठ स्थित भगवती का प्राचीन मंदिर, कमतौल के समीप भग्न देवी मंदिर, अहिल्या स्थान (कमतौल, जय मंगलागढ़, देवी मंदिर, श्यामा मंदिर (दरभंगा राज क्षेत्र) कात्यायनी स्थान मानसी सहरसा रेलखण्ड के मध्य जैसे अनेक देवी मंदिर है। मैथिल यानि मिथिलावासी शिव की तरह ही शक्ति के आराधक है। मिथिलावासी मूलतः धर्मपरायण रहे है। इसके अनेक कारण है। जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, कपिल आदि के साथ–साथ जनके के राजप्रसाद में आध्यात्मिक जिज्ञासुओं तथा जनक की अपनी जिज्ञासा ने अष्टावक्र शुक्रदेव आदि को भी अपनी ओर खींचा। इतना ही नहीं इसी उपक्रम में यह बताया जा चुका है कि अद्वैत के प्रखर प्रवक्ता शंकर भी मंडन मिश्र के साथ शास्त्रार्थ के लिए सुदूर दक्षिण से मिथिला की भूमि में पधारे थे।

ज्ञातव्य हो कि मिथिलांचल में ऐसे पुरातात्विक स्थल है जो अपनी कोख में इतिहास के अनेक अनजानें एवं अनकहें तथ्यों को समेटे हुए है। इसमें बलिराजगढ़ (मधुबनी के बाबूरही प्रखण्ड) अंधराठाढ़ी (मधुबनी) पस्टन (मधुबनी जहाँ पालकालीन सूर्य एवं विष्णु की मूर्ति) पंचोभ, कोपगढ़, मंगलगढ़ (समस्तीपुर) नौलागढ़ (बेगूसराय) आदि प्रमुख है। आवश्यकता है कि पुरात्व विभाग एवं इतिहासज्ञ इसका अध्ययन गहराई से करें।

मिथिला क्षेत्र में दरभंगा से नेपाल सीमा पर स्थित जयनगर मार्ग पर कपिलेश्वर महादेव मंदिर है। दरभंगा–जयनगर मार्ग से सटे ककरौर ग्राम में यह मंदिर स्थापित है। जनश्रुतियों के अनुसार यह स्थल सांख्य दर्शन के प्रवर्तक कपिल से जुड़ा है। मंदिर का विग्रह भग्न है। अतः इसके निर्माण काल से ही सही जानकारी नही हो पा रही है।

वर्तमान सीतामढ़ी तथा पूर्व में मुजफ्फरपुर जिले के कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण आध्यात्मिक केन्द्र हैं। ज्ञातव्य हो कि यह क्षेत्र भी मिथिलांचल में आता है। इनमें प्रमुख है–सीतामढ़ी, हलेश्वर, पंचपाकर, नानपुर एवं पुनौरा।

सीतामढ़ी नाम के संबंध में किवदंती है कि सीरध्वज जनक के हल जोतने के क्रम में सीता को प्राप्त किया तो नवजात सीता को मूसलाधार वर्षा से बचाने के लिए मडई बनाई गई। इसी क्रम में उस स्थान का नाम सीतामढ़ी हुआ। सीतामढ़ी शहर के पश्चिमी किनारे पर जानकी स्थान तथा उर्विजा कुण्ड है। कतिपय विद्वानों की यह मान्यता है कि जानकी स्थान में जानकी की मूर्ति कुंड की खुदाई में मिली थी। एक तथ्य और पृथ्वी को उर्वी भी कहते है। हल की नोक से उर्वी के वक्षस्थल से सीता उत्पन्न हुई। अतः उन्हें सीता को उर्वीजा भी कहा जाता है।

मिथिला के धार्मिक स्थलों की चर्चा के क्रम में जनकपुर एवं धनुषा का परिचय ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से अनिवार्य है। संप्रति ये दोनों क्षेत्र नेपाल में है। संभव है कि ये कभी मिथिला के अंग रहे हो। जनक की वंशावली से यह प्रमाणित होता है कि राजा जनक की राजधानी

जनकपुर थी। सीता की भूमि (जानकी की भूमि जनकपुर है। राम–विवाह में जनकपुर का विवरण उपलब्ध है। हिन्दू जनकपुर का एक धार्मिक स्थली के रूप में मान्यता देते है और यहाँ पहुँचकर अपने को धन्य मानते है। जनकपुर में अनेक मंदिर है। धनुषा के संबंध में यह कहा जाता है कि यहीं पर राम–सीता विवाह में धनुष तोड़ा गया था। स्वयंवर होने के कारण इसे रंगभूमि भी कहा जाता है। हिन्दुओं के लिए यह एक पुण्य स्थली है।

मिथिलावासी में धार्मिक सहिष्णुता का अभाव नहीं। अनेक स्थल है जहाँ हिन्दू एवं मुसलमान पूरी शिद्दत से प्रार्थना और इबादत करते है। इनमें एक है समस्तीपुर जिले के सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक है। खुदेनेश्वर स्थान यह मोरवा प्रखण्ड में है। यहाँ एक स्वयंभू शिवलिंग के सटे मुस्लिम भक्त महिला खुदनी देवी का मजार है। भक्त शिवलिंग की पूजा के बाद मजार की भी पूजा करते है।

संदर्भ सूची :

1. मिथिला के पुरातात्विक स्थल–देव नारायण यादव, पृष्ठ 199–208, मिथिला संस्कृति और परंपरा, संपादक विश्म्भर झा एवं अन्य सोसाइटी फॉर रेजिनल स्टडीज पटना–2001.
2. मिथिला दर्पण–पृष्ठ 58, उपेन्द्र ठाकुर–हिस्ट्री ऑफ मिथिला, पृष्ठ 57.
3. जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, पृष्ठ 119, 1903.
4. हिस्ट्री ऑफ मिथिला, पृष्ठ 340, डॉ0 उपेन्द्र ठाकुर.
5. जानकी उत्पत्ति महामात्य–रामस्वार्थ सिंह, पृष्ठ 16–17.
6. गुफाएं एक नवीन खोज–अरूण कुमार मिश्र, कादम्बिनी, जनवरी, 2003, पृष्ठ 52.
7. मिथिला का इतिहास–डॉ0 रामप्रकाश शर्मा, पृष्ठ 554.
8. संस्कृति के चार अध्याय–रामधारी सिंह दिनकर.
9. बिहार की नदियाँ, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सर्वेक्षण, हवलदार त्रिपाठी, पृष्ठ 396.